



श्रीगुरु
विन्द

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबहार

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

DH 202

हनिमनपूजापाशुपूजादवपूजागीतचक्र॥दिगुबलिस्नानकिशन
चक्रपूजा॥चक्रव्यवित्तग(६४)माहाकावपूजाशयनायकरूपनिस्य
ननायकवलिवियगुग्मधुलदिसमाधियादं॥चक्रव्यवित्तश्रुति
गलाकपालपूजादिगुबलिगुग्मधुलदनकस्नानकशनगुग्मपूजाद
क्षिप्ता॥दं१पंचाक्षरसगनंभायश्राद्धसवियगीतविविहंविश्राद्ध
सलिलपूजायग(६४)माहाकालशयमधुलपानालउपपूजायश्रागंम
यंश्राद्धनयायसगंधलिनयगीतगजाजिन॥दिवास्वायधकृका

मिस्र राज नं॥ मन्मसि तं लख्य नि सिद्धि मूढ मं॥ **उध** तु कं बुद्धि न सर्व
 सत्त्वं न च कषु प्र न बु च ति र्प कषु॥ नानादः खम न त पृथ्वं त्वं च क पृथ्वं
 प्र ति सां तय न॥ लघा र वं तु ह् ह् न नि वृ द्ध ह् न ग्री व द्ध स त्व प द वि
 शु मा हा स ख त्वं॥ सं सा च दः ख प वि मू क र व म वृ द्धं॥ गंधा दि पू ष्य व ज ध्रु
 प दी प नं च च कं न मा मि णि च सां क लि न म र्क॥ र व स म स म सं का
 र ग्न सं क ल्प सं का र मि व स क ल स त्व रा व ना वि क्र मा ना ग्न नू त न क नू
 त्नां रं म्ही न धि नां व ना थ क नू त न क नू त द व्या म र्क ति पा नू कं पा ॥

ॐ मि श्री ग ध म धु त ग्ना वि धि समा फ ॥ ॐ ॥ म न वि य ॥ न श
 रि ना मा व रु च ल का षा न ना धि वे व चि त वा द प द्मा॥ ह् न प्र दी पा ह न
 मा ह् काला थ दी प मा ला च च यं ति वृ द्ध॥ दी पा यं ह् न ति ध्वां तं सर्व ति
 मि त ना णि नं॥ घृ त तं ल स म् काला म या द द्धु प्र ग् क र्ता॥ ॥ ता य
 हा ल ॥ अ द्ध म स रू लं क न्म स रू लं जी वि तं च मे॥ स म य सर्व वृ द्धानां
 व वि श हं न सं गाय॥ अ (ग) म दि व सा ह् द य य ह् न म वि द नू द्धु वः॥ स
 पा ना र व द्धु य सर्व वृ द्ध नि म न ना न्॥ **श्लोक ॥** सा प्प द्वा ह् वि द धु क

श्रवणरक्षाणीता हविषावकः कथादापवनावविः शशधनावकासु
ताह हविः ॥ १ ॥ अगावेदगदिग्निसहगत्ता द्रुष्टान्यमायादये ॥ काधा
मत्पविकीययंति सर्वजगतां विद्यापणं व्यधुवं ॥ ॥ ॐ सर्वताथा
गतासां सर्वताथागतलयं ॥ सर्वधर्माग्र्येनात्मदणमधुलमूकमं
॥ १ ॥ शशधर्माग्र्यसंस्तुतं हानचर्याविः शशधकं ॥ समनरुद्रकायाग्रं
लावमधुलमूकमं ॥ २ ॥ सर्वलोकसंपूर्णं सर्वलोकनवर्जितं ॥ सम
नरुद्रचिह्नं मनामधुलमूकमं ॥ ३ ॥ सर्वसत्त्वमाहाचिह्नं शुद्धपक

निनिर्मलं ॥ समनरुद्रवाचाग्रं द्यावमधुलमात्रं ॥ ४ ॥ दानपति र्य
जमानस्य ॥ यथाशक्तं कुरुत पाप्मं र्थं शीमन्शी २ चक्रसंभववद्र
वाचाहिदवदवीपीत्यर्थं मासमासं दणमिपूर्ध्वं र्थं निशचक्रसंपूर्णं
निमित्तं र्थं शनिव्यउथ ॥ रुवउथ ३ ॥ मनहिलक ॥ धनविमर्जन
या ॥ दवकायचक्रं श्रुतिविनायाचक ॥ गुरुः श्रुतिविय ॥ सिधुः शुभा
दनिश्रुगं न संकलंति चक ॥ नृकाय पाशकाय ॥ ताचाकाय शुभगुरु
मधुलदनकं गालचाकाय ॥ विपंथियक ॥ मुखगुहिकाय मधुलसका

किं पुचल गय मरु विय स्तान को काय मुख शुद्धि वाक्याय ॥ ॥
 निदग्मि पूजा विधि ॥ शुभम् ॥ ॥ ॥ ॥
 नग मधु मरु ॥ गाल रूप ॥ ॥ दिवक रथ विगमि मधु लमा ॥
 स्थिति आनंद मूर्ति धवा २ वक्र वा जाहि आलिङ्ग संम्व नाना वस्त्रि
 महा कूट वा ॥ गना २ गना गना कूट वा ॥ ॥ नील वर्ध चतुर्व
 कुपति मुख विनय पञ्चमानन्द मूर्ति धवा २ विष्णु वक्र अर्द्ध चन्द्र
 ऊय मकूट धवा हा उ आरु वध सु (ग) रिता ॥ ॥ वक्र घटग

ऊचर्म उम प्रख हा ग धवा विजमा आनंद मूर्ति धवा ॥ कवन्ति क
 पातरु स्रव स्रपा ण धवा रिठाल वक्र गिध धवा ॥ ॥ दिगं वि
 दिगं काका स्यादिगं यमदा दिया २ सहजा आनन्द मूर्ति धवा ॥ नमामि
 २ श्री चक्र संम्व वधा गूत्र च च (ध) आ वा धिना ॥ ॥ ॥
 राग विरा स गाल ऊरि ॥ ॥ दिवक रथ मुख विनिनयन मकूट
 क ग्ना दिगं वजा ॥ गना २ गना ॥ वाम क जाट क दहि न क नकि
 धवा ॥ हा उ आरु वध विरु धिना ॥ सूर्य मधु लमा ॥ नाद्यु वमूत्र

निधना नवगिरिमातुः (महिता ॥ गतगुचवच (धमिस्तुग
 नधविद्याः वक्रवावाहिआलिंगध ॥ ध्र ॥ २ ॥ ॐ ॥
 नागवसन ॥ गालरुप ॥ ॥ अष्टदलसंजाऊ उरुवपका
 गिरिणी ॥ अमृनिवच ध्यानं चना ॥ दहिनक वक्रपाणि वा
 सकमल ॥ शि नमामि श्रीधर्मं जाऊ महामुनि ॥ ॥ दहिन
 क्रिद्धि धन वामकृष्टिगण विचिद्रचिवच धाचिरुवन व्यापि
 ना ॥ काचृधमानसनिर्मल हृदया सत्व उद्धावध अरुयपदा

ना ॥ ऊचमऊचममाचुरुशसर्गनि गमनं तुष्टु सुमवधन मा कू
 प्रदाता ॥ ध्र ॥ ॐ ॥ नागदेववि ॥ नाचप ॥ गजाजिन उद्धा
 (थधविद्या ॥ मलकृलिस अक्रवाचा २ उमचूकं रिक कृष्णवधि
 शुना वामखलांगकपाचूधन ॥ ध्र ॥ श्रीसमवाद्यवाकृलितु
 कऊमूनाचूय २ मानयिचचापियापियमाया ॥ सहऊगुरुव
 ना अलिलना ॥ पाणकव कसूदय द्वादशरा (थधविद्या उनवगिरि
 माला २ विग्वकृलिग अर्द्धचतु ऊयमकूट व्याचूर्णमवटमूडा ॥ ध्र

॥ आलित पञ्चाङ्ग च पापयिष्यं च काञ्चिनादिदिनमूढा ॥
 ध्रु ॥ नीलहिराहिरकनकामयचउमूखअतिरिषधया ॥ ध्रु
 कृदिसंवीचंविषयंनयकनिनिचक्रमहाविचंविजा ॥ ध्रु ॥
 कचूनसंहायविचंविषयंनचुंऊयिसययसंसाचूय ॥ ध्रु ॥
 ॥ जागरुचवि ॥ कालरूप ॥ विविहंविहनचमूखचंविषयिब
 दन २ दवनचमूखगधचुवनहहुकचूध ॥ नाचयिचनमा
 मिथीसमचविजा ॥ वक्रथागिनिचमिथसचगंगजा २ मूक

कंभानंगधखन्दमखलाहविना ॥ ध्रु ॥ वक्रवाचाहिआलिंगध
 क ६ २ कृदिसंविचंविषयंनयसमचसं(गस्थिच) ॥ ध्रु ॥ (ग
 कन्दहनचमूखमदहकृक २ कचूधसंहायनगगधहहुकचिध
 ॥ ध्रु ॥ दादधचुऊधविचचापिचउवन्दन २ नीलसंहायनग
 गधंहुकचिध ॥ ध्रु ॥ ॥ ॥

उन्नमः श्रीचक्रसमवाय ॥ ॥ नावाहालसचक्रध्विनाय
 विधिथ ॥ क्रापालिचायक ॥ थहाविज्ञाचक ॥ थनचैयमर

खाय थापिं पूजायाय धूमिधूनकाठाचक्रं विरुनकिं रुपनि
 म पूजायाय सां सिद्ध दानाजंकाद २ दक्षिण कू १ आकि
 १३॥ धूमिं मधिकसि सिद्धाधिक थापा निमलाक्रमिरुल
 ॥ धूमिधूनकाठा ॥ पंचाकूगविय अष्ट ३ कायला ॥ २ अष्ट
 ला ॥ हनंपंचाकूगविय अष्ट ३ धाल २ नेलाविय ॥ त्वयकच
 कं धविरु नकिं रु निरुस्यं नंदं ४ दामनयकाठा थठा थातम
 नय ॥ मनकायक मंगविय उशांरुपलिलुआ काय दं ४ दक्षि

धानयाठा ॥ मधि सिमा वृसा दामनलय ॥ थनपंचाकूगविय
 अष्ट ३ धानेला २ नयकं थनसमयविय कू १ सियावडि कू
 १ पावडि मात पाल उमात ५ १ खायदछा रं चकं चि १
 कू १ चारुका खायदिप वेत नेधयक ॥ शंऊनथथ
 कू १ वडि का र द्याशा खाला १२ नापेचा अनेला
 लागलापि वागरेवे वा थदकं थयकरुल ॥ ह
 चं वडि यकं आहिनकं शऊनया

चक ॥ जलाथ
मथमधि मरुशुद्धि
भवित्वयविधि

न वासथ धर्मकिर्ति विहाय या शी चक सम्यक् वद वा जाहिषी
श्रुर्थं दंदमि पूजा पूरक वक्षा चार्थ जलसाग ज थुगद वि
शासाग ज थलपाल्याव लस जलसाग जं का गु स पूर जिर्धु रू
सीति म्प गु स रू न या गु रू ल ॥ शुंरु म सु सर्वदा ॥ ॐ ॥

नियक श्रुत्या ३

नका काय थुनि चक

नकृष्ण द्वादसि गनिष्ठ

धम्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH202